शिव स्थापना का मर्म

यह समारोह शिव के मन्दिर की स्थापना के उपलक्ष्य में हो रहा है। वैसे यह शब्द कुछ विचित्र है। शिव का स्थापन एक विचित्र बात है क्योंकि ऐसा कोई पदार्थ नहीं है जिसके अन्दर शिव मौजूद न हो। वैसे शिव स्थापन नहीं किया जा सकता है। वो स्थापित पहले से ही है। मगर व्यवहार के अन्दर हम कह देते हैं कि शिव स्थापना कर रहे हैं।

जिस चीज़ को हम स्थापना करना चाहते हैं, शिव उसके अंदर पहले से ही मौजूद होंगे। जहां स्थापित करना चाहते हो, वहाँ भी पहले ही मौजूद होगा। शिव एक ऐसा पदार्थ है जो एक सैकिंड के लिए भी कभी दूर नहीं होता है। ये बाह्य व्यवहार, बाहर जितना भी क्रिया होता है वास्तव में इसके उद्देश्य को गहराई से देखो तो अन्दरूनी भाव ही प्रकट करने के लिए बाहरला क्रिया होता है। अन्दरूनी भाव को प्रकट करने के लिए ही बाहरला क्रिया होता है।

जितना काम हम करते हैं, जैसे सुनते हैं, सुनाते हैं, कीर्तन करते हैं, कीर्तन एक बाह्य क्रिया है किन्तु उस कीर्तन के ज़रिए से हमारा अंदर छुपा हुआ भाव प्रकट हो जाता है। इसी प्रकार यह शिव-पिण्डी-स्थापन उन्हीं भावों को जाग्रत करने का ज़रिया है। अंदरूनी भाव हमारा जाग्रत हो जाए, जैसे मंदिर है, मंदिर के पास पहुँचते ही, रास्ते पर ही यह समझते ही कि यह मंदिर है, यहाँ शिव रहता है, भाव उत्पन्न हो जाता है। यह शिव भाव उसके अंदर पहले ही छुपा हुआ है, मगर बाहरले पदार्थों से वह जाग्रत हो जाता है।

वैसे देखा जाए तो इस सृष्टि के अन्दर जितने मंदिर, मस्जिद हैं, उनका उद्देश्य यही है कि जो भूला हुआ है, जो आत्म तत्व है, जो परमात्म-तत्व है ये उसको याद करने का एक ज़रिया मात्र हैं। वो परमात्म-तत्व हम सबके अन्दर समान-रूप से रहता हैं। वह कभी किसी से दूर हो ही नहीं सकता है, न ही किया जा सकता है। क्योंकि उसे सर्वत्र भरा हुआ व्यापक माना जाता है। क्योंकि ऐसा कोई जगह नहीं है, व्यापक होने की वजह से ऐसा कोई जगह नहीं है। जिसको निकृष्ट पदार्थ समझते हो, निकम्मा पदार्थ भी समझते हो, उसके अंदर भी वह मौजूद होगा। उसका निकम्मापन भी उसी की झलक है। उस चैतन्य की ही झलक है। उस परमात्मा की ही झलक है। उस शिव की ही झलक है। जिस-जिस पदार्थ के अन्दर जो कुछ भी आपको नज़र आता है, उसके अंदर शिव ही प्रतिष्ठित है, और कोई पदार्थ प्रतिष्ठित नहीं। क्योंकि प्रकृति पुरूष दो चीज़ ही माना जाता है।

सांइसकारों ने, भिन्न भिन्न लोगों ने माना है कि प्रकृति उसका बाह्य रूप है, भीतर उसके शिव माना जाता है। जैसे प्रत्यक्ष हमारा शरीर है, यह प्रकृति है यह बाह्य रूप है। इसके अन्दर जो छुपा हुआ है, वह शिव है। आत्म रूप है। शिव के छुपे बिना वह शरीर कभी भी सिद्ध नहीं हो सकता है। मंदिर, मस्जिद जो कुछ प्रतीत होता है वह उसका बाह्य रूप है, मगर अंदर जो कुछ है, वह चैतन्य छुपा हुआ है। जैसे कि एक ईंट उठाकर देखो, वह उसका बाहय् रूप है, मगर उसके अंदर चैतन्य छुपा हुआ है। वह प्रतिष्ठित पहले से ही है। वह शिव ही है।

किंतु इसको प्रतिष्ठित कर यह समझाया जाता है कि इसके अंदर शिव है। शिव तो पहले से ही है। मगर शिव प्रतिष्ठित होने के बावजूद सबको पता नहीं। कहने के लिए एक मंदिर बना दिया जाता है। कह दिया कि इसमें शिव प्रतिष्ठित हैं। तो बाहरले शिव के ब्याज से हम अंदरले शिव की पूजा करते हैं। जो हमारे अन्दर छुपा हुआ चैतन्य है। जिसका हम पूजन करते है उसको जड़ नहीं मानते है, चैतन्य ही मानते हैं। उसे प्रकृति नहीं ईश्वर मानते हैं। इससे सिद्ध हुआ कि वास्तव में जो कुछ भी पूजा हम बाहर करते हैं, उससे हमारा अंदरूनी हिस्सा जाग्रत होता है, जिसको शिव कहते है। किसी भी प्रकार, जैसे, आप अन्न चढ़ाते हो, जल चढ़ाते हो, पुष्प चढ़ाते हो, आरती करते हो, और भी जो कुछ करते हो, कीर्तन करते हो उसका उद्देश्य है कि इसके पीछे चैतन्य शक्ति है, ईश्वर है, वह किसी प्रकार जागृत हो जाए। मन के अंदर जागृत हो, इसके लिए यह सब कोशिश की जाती है। यही इस मंदिर का उद्देश्य है।

इस दृष्टि से देखा जाए तो यह मंदिर बड़े फायदे की चीज़ है। क्योंकि सवेरे से शाम तक हम भूले रहते हैं। मंदिर देखते ही उसका स्मरण आ जाता है। विचारणीय विषय यही है कि हम उसे स्मरण कहां करते हैं। कहीं बाहर नहीं करते हैं। मंदिर देखते ही हमारे अंत:करण के अंदर यह स्मरण आता है कि शिव मंदिर है। अंत:करण के अंदर ही स्मरण आएगा न कि बाहर स्मरण आता है? अंत:करण के पीछे जो छुपा हुआ है उसी का स्मरण करते हैं, न कि किसी और पदार्थ का स्मरण करते हैं। इस प्रकार जितने भी हम पूजा वगैरह करते हैं वास्तव में जो उसके पीछे छुपा है, उस आत्म तत्व का ही पूजन होता है, और किसी का पूजन न कभी सृष्टि में हुआ है, न हो सकता है। क्योंकि सृष्टि के अंदर किसी का भी पूजन होते हुए देखते हो उसके बाहरला अंग का पूजन नहीं होगा। यदि पूजन हुआ तो उसके अंदर छुपे हुए चैतन्य का ही पूजन होता है और किसी का भी नहीं होता।

इसी प्रकार हम बाहर के उपकरण से जो पूजन करते हैं वास्तव में वह पूजन जो होता है – अंत:करण के पीछे जो छुपा हुआ चैतन्य – शक्ति है, उसी का ही पूजन होता है। मगर उसको जागृत करने का ज़रिया है। बाहरला मैं कह चुका हूँ कि सृष्टि के अंदर बाहरला आपको जो कुछ प्रतीत होता है वैसे सारे के सारे अन्दर को प्रकट करने का ही एक ज़रिया है। जैसे बुद्धि के अंदर कोई विकार छुपा हुआ हो, बाहरला कोई चीज़ देखते ही प्रकट हो जाता है। जैसे किसी के अंदर कोई क्रोध छुपा हुआ हो, विपरीत आचरण होने पर उसका क्रोध जागृत हो जाता है।

इस प्रकार बाहर के हर पदार्थ को गहराई से देखने से पता चलेगा कि इसका उद्देश्य यही है कि हमारे अंदर जो कुछ छुपा हुआ पदार्थ है उसे जागृत करने के लिए ही यह बनाया जाता है। बाहर मंदिर वगैरह जो बनाया जाता है उसका उद्देश्य यही है कि हमारे अंत:करण में जो शिव है उसको जागृत करने का एक ज़रिया है। इस ज़रिये के रहस्य को समझ कर यदि काम लिया जाए तो ज़रूरी है कि हमारा कल्याण भी होगा। जैसे हम शिव पूजन के लिए बैठ जाते हैं, 'ॐ नम: शिवाय' कहते हैं, या किसी मंदिर में जल चढ़ाते हैं, बिल्व पत्र चढ़ाते हैं, पुष्प धूप नैवेद्य वगैरह दीप इत्यादि, यह सब किसके लिए करते हैं? इसका उद्देश्य क्या हैं? इसका उद्देश्य है कि शिव प्रसन्न हो, ईश्वर प्रसन्न हो। इस उद्देश्य को ही मद्दे नज़र रख कर सब कुछ करते हैं।

गइराई से देखो तो इससे प्रसन्नता आ जाती है। पूजन करते ही हमारे दिल के अंदर प्रसन्नता पैदा होती है। यदि दिल के अंदर प्रसन्नता पैदा होती है तो वह दिल के अंदर पहले से ही छुपी हुई होती है। उसे जागृत करने का एक ज़रिया मात्र बन जाता है। वो प्रसन्नता बाद में जो किसी पूजन या आचरण के बाद पैदा होता है वो हमारे दिल के अंदर पहले ही छुपा हुआ था। मगर इस ज़रिए से वह जागृत हो जाता है।

पूजन करने के बाद हममें प्रसन्न दृष्टि आ जाती है कि हमने शिव का पूजन किया। शिव का पूजन करने का भाव हो जाता है तो आनंद ही है। सृष्टि के अंदर जो कुछ भी हम काम करते हैं, कुछ भी करते हो, उसका आखिरी उद्देश्य आनंद ही होगा। वह कहां जागृत होगा? इसका अनुसंधान गहराई से करना होगा। आनंद की जागृति अंदर ही होगी, बाहर कहीं नहीं हो सकती। बाहर जो आनंद है वह केवल अंदरूनी आनन्द को जागृत करने का ज़रिया है। इसी प्रकार मंदिर या जो कुछ भी बनाया जाता है, वह शिव तत्व को जागृत

करने के लिए बनाया जाता है। शिव तत्व तो हमेश जागृत है। किंतु हमें उसका भान नहीं है। बुद्धि को उसका भान कराने के लिए ही सब किया जाता है। इस रहस्य को जानकर ही मंदिर बनाया जाए, पूजन किया जाए तभी फायदेमंद होगा।

इसमें घाटे की कोई बात नहीं। हानि कोई नहीं, इसमें लाभ ही लाभ होगा। जिस प्रकार से भी ईश्वर का स्मरण आए, किसी ज़रिए से भी ईश्वर का स्मरण आए वह तो लाजमी फायदेमंद होगा। अत: मैं पहले कह चुका हुँ, जितने भी आचरण, हम जो कुछ भी करते हैं, उस आनन्द को जागृत करने के लिए करते हैं। शिव आनन्दस्वरूप माने जाते हैं। ईश्वर का एक नाम सच्चिदानंद है। मुख्य नाम माना जाता है जिसका अर्थ है सत्, चित् और आनन्द। तीनों को मिलाकर सच्चिदानंद कहा जाता है। सत् और चित् ये आनन्द का विशेषण है। हम सब कुछ इसी को जागृत करने के लिए करते हैं। मगर वह हमारे अंत:करण के पीछे छुपा हुआ होता है।

अन्त:करण किसी भी आचरण से, कामों से जब स्थिर हो जाता है तो स्थिर होने पर उसमें आनंद अपने आप प्रकट हो जाता है। जब तक स्थिर नहीं होगा तब तक आनंद कभी नहीं मिलेगा। इसी प्रकार सृष्टि में पूजन, अर्चन जो कुछ भी हम करते हैं उसे करते करते अन्त:करण में स्थिरता मिल जाती है। स्थिर होते ही वह आनन्द प्रकट होने लग जाता है। देखो ना, सृष्टि के अन्दर जितने भी काम हम करते हैं आनंद के लिए करते हैं। आखिर वो आनंद कहां प्रकट होता है? बाह्य पदार्थ तो उस आनंद को प्रकट करने का एक ज़रिया- मात्र हैं। बाहरले के अन्दर कोई आनंद नहीं।

आनंद का अनुभव हम अन्त:करण के पीछे ही करेंगे। अन्त:करण के पीछे वो शिव तत्व ही है। उसी को साक्षात्-रूप से अनुभव करने में असमर्थ होने के कारण मंदिर वगैरह बनाकर, पूजन कर या भिन्न-भिन्न नाम-रूप देकर या कीर्तन को ब्याज बनाकर उसे जागृत करने की कोशिश करते हैं। उसे जागृत करने में कोई समर्थ हो जाए तो बहुत ही श्रेष्ठ है। मगर साक्षात् जागृत नहीं होता। इसीलिए मनुष्य बाह्य भिन्न-भिन्न उपकरणों को लेने की कोशिश करता है। जैसे बुद्धि में छिपी विद्या रीति वह बाह्य ज़रिए से ही जागृत होगा। बाह्य ज़रिए न हो तो वह सोया रहता है, जागृत नहीं होगा। इसी प्रकार किसी के भी भाव को हम समझ लें, वह बाह्य उपकरण से ही जागृत होता है।

किसी को भी बुलाना चाहते हो या उसके अन्तःकरण में छिपे हुए विषय को जानना चाहते हो तो उसे बोलना होगा, उसे बुलाना होगा। बाह्य आवाज़ पहुँचते ही उसकी बुद्धि के अन्दर जो छुपा हुआ भाव है वह जागृत होगा। वो बाहर निकलने लग जाता है। इसीलिए यह उदाहरण हमने दिया। सृष्टि के अन्दर जितना भी काम किया जाता है वास्तव में उस शिव को जागृत करने के लिए है, उस शिव तत्व को समझने के लिए, उस शिव तत्व में स्थिरता प्राप्त करने के लिए और कोई कोशिश सृष्टि में न बना है, न बन सकता है। संसार में जितने भी जीव-जाल आपको प्रतीत होते हैं उसी शिव- तत्व को जागृत करने में लगे रहते हैं।

मैं पहले कह चुका हूँ सृष्टि में जितने भी पदार्थ हैं, इसके उद्देश्य को गहराई से देखेंगे तो हमारे अंतःकरण में छिपे हुए भाव को जागृत करने का एक ज़रिया-मात्र है। वास्तव में उद्देश्य वह ही है जिसे जागृत करना चाहते हो। जागृत तो अन्नंदः को ही करना चाहते हो। कोई भी काम कर लो तो उसका मुख्य उद्देश्य आनंद ही होगा उसे जागृत करने के लिए हम भिन्न-भिन्न काम, ज़रिए करते है। उसमें से एक यह मंदिर भी है। यह भी फायदेमंद है। जहाँ तक हो इस भाव से स्थापन करे, पूजन करे, इसका अर्चन करे, तो वास्तव में जो अर्चन पूजन होता है उस ब्रह्म उस ब्रह्म का ही होता है। सिवाए ब्रह्म के जड़ का पूजन न किसी ने किया है, न ही कर सकता है। जहाँ तहाँ भी हम पूजन करते हैं, उस चैतन्य का ही पूजन करते हैं।

चैतन्य के ज़रिए ही चैतन्य का पूजन होगा और पूजन कभी हुआ ही नहीं। मगर ये एक ब्याज-मात्र है जो बाहर हमें प्रतीत होता है। तो कहने का मतलब है कि शिव पूजन में बड़ा भारी एक खूबी है कि इसमें बाहरले उपकरणों की कोई ज़रूरत ही नहीं। मामूली जल ही चढ़ा दो तो वो इस से संतुष्ट हो जाता है। जल चढ़ाने से हमें संतुष्टि मिलेगी। हमारा दिल संतुष्ट हो जाएगा।

दिल संतुष्ट होते ही हमारा चैतन्य जागृत हो जाएगा। उसके पीछे जो छुपा हुआ आनन्द है वह जागृत हो जाएगा। शिव पूजन के लिए कोई आडम्बर की ज़रूरत नहीं। गरीब से गरीब भी एक गड़वा जल चढ़ाकर शिव का पूजन कर सकता है। मगर पानी के अंदर एक बड़ा भारी खूबी है। सृष्टि के अंदर किसी भी पदार्थ को शुद्ध किया जाता है तो पानी के

ज़रिए शुद्ध किया जाता है। उसमें भी पानी–तत्व छुपा रहता है। उसके ज़रिए से शुद्ध होता है। इसलिए सबसे पवित्र पदार्थ पानी ही माना जाता है।

जैसे शरीर शुद्ध करना हो, कपड़ा साफ करना हो, बर्तन शुद्ध करना हो, या किसी भी चीज़ को शुद्ध करना हो तो पानी के ज़रिए से ही शुद्ध किया जाता है। पानी से शिव बहुत प्रसन्न रहते हैं। वजह यह है कि पानी सबसे शुद्ध पदार्थ है। शुद्ध पदार्थ होने की वजह से उसकी कीमत भी बहुत ज़्यादा होती है। यद्यपि पानी को चढ़ाते समय हम समझते नहीं हैं। समझते हैं कि यह मामूली है, सस्ता है। मुफ्त में मिला है। मगर उसकी कीमत बडीा भारी होती है। क्योंकि वो बिल्कुल शुद्ध पदार्थ है।

शुद्ध पदार्थ को ही शिव को अर्पण करना चाहिए। अशुद्ध पदार्थ को शिव को अर्पण नहीं करना चाहिए। तो सबसे शुद्ध पदार्थ जल है। जल से सब कुछ शुद्ध होता है। इसलिए जल चढ़ाते ही हमारे दिल के अन्दर प्रसन्नता हो जाती है कि हमने शिवजी के ऊपर जल चढ़ा दिया। इसका नतीजा यह होता है कि हमारे पीछे जो छिपा शिव है वह जागृत हो जाता है। शिव–तत्व की एक झलक हमें मिल जाती है। पूजा का आखिर में यही फल मिलता है। यदि पूजन करने के बाद शिव नहीं मिला, आनंद नहीं मिले तो कुछ भी नहीं मिला। पूजन के बाद यदि हमें संतुष्टि, प्रसन्नता नहीं मिली, आनन्द नहीं मिला तो वह पूजन कुछ भी पूजन नहीं, आनन्द अवश्य मिलना चाहिए।

सृष्टि के अंदर हम जितने भी काम करते हैं ये शिव का पूजन ही है। सवेरे से शाम तक आप जितने भी काम करते हो, किसके लिए करते हो? इस लिए तांकि हमें आनन्द मिल जाए। कोई भी काम ऐसा नहीं करते हो जिससे आनन्द नहीं मिलता हो। आनन्द को ध्यान में रखकर ही सब कुछ किया जाता है। जितने भी सृष्टि में काम किए जाते हैं, ये सब शिव का ही पूजन है। “यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भी तवाराधनम्”

हे शिव ! हम जो कुछ भी करते हैं वह सारे का सारा आपकी अराधना है क्योंकि हम मूँह से, आँखों से, कानों से जिन–जिन इन्द्रियों से जो कुछ भी करते हैं उससे आनन्द ही होगा। वो शिव ही आनन्द की शक्ल में छिपा हुआ है। वैसे देखा जाए तो सृष्टि के अंदर सुबह से शाम तक जितने भी काम हम करते हैं, उठते हैं, बैठते हैं, बोलते हैं, कुछ भी करते हैं, यह शिव पूजन के अलावा और कुछ भी नहीं है।

यह दृष्टि जिसको मिल जाए वह बड़ा भाग्यवान् है। उसका एक सैकिण्ड भी फालतू नहीं होगा। उसका हर सैकिण्ड ही शिव पूजन में गुजर जाएगा। वास्तव में यह बिल्कुल सत्य सिद्धान्त है। हाँ, जिसको यह दृष्टि नहीं मिली हो, सिद्धांत नहीं समझा हो वो मंदिर को देखते ही शिव का स्मरण कर लेता है तो वह भी शिव का पूजन कर लेता है। यह स्पेशल पूजन कहा जाता है। कुछ समय के लिए ही उसको शिव का स्मरण हो जाता है। अर्थात् जिसके ज़रिए से भी शिव का स्मरण हो जाए तो सब मंदिर ही मानना होगा। मंदिर का उद्देश्य इसी वजह हुआ कि हम जो भूले हुए शिव हैं उसको वह जागृत करें। इसी वजह से वह मंदिर बना हुआ है। हमारे कहने का मतलब है मंदिर फायेदमंद है। मगर इस रहस्य को समझकर ही उसका स्मरण करें। वास्तव में इस सृष्टि के अंदर जितने भी काम हैं मैं पहले बता चुका हूँ, वह सब शिव का पूजन हैं। इसके अलावा कुछ भी नहीं।

यह एक बडी भारी दृष्टि है। यह दृष्टि ही हमारा उद्देश्य है। वास्तव में इस मंदिर का उद्देश्य भी यही है कि जिसे हम भूले हुए हैं, उसी भूले हुए का स्मरण हो। ईश्वर कोई ऐसा पदार्थ नहीं जो हमसे दूर चला गया हो। सिर्फ हम भूल गए हैं। वह हर जगह पर है, सर्वत्र भरा हुआ है। एक सैकिण्ड के लिए भी हमसे दूर नहीं। मगर वह हमें मिलते क्यों नहीं? वह हमेशा हर समय हमारे पास रहते हैं। भूलना ही उसके न मिलने में रुकावट है। यदि हमेशा उसका स्मरण हो रहा हो तो यह मिला हुआ पदार्थ है। एक सैकिण्ड के लिए हमसे दूर नहीं होता है।

उस भूल को सुधारने के लिए मंदिर एक बड़ा भारी काम देता है। मंदिर जब हमारे सामने आ जाता है तो हमें शिव का स्मरण आ जाता है। वह स्मरण ज़ारी रहे तो बेहतर। एक बार स्मरण आता है फिर भूल जाता। मगर यह एक बार समरण आना भी बेहतर ही है। वो भी फायदा करेगा। क्योंकि किसी चीज़ का बीज पड़ जावे तो अनुकूल समय आने पर कभी न कभी वह उग सकता है।

इसी प्रकार वह ईश्वर भाव हमारी बुद्धि के अन्दर एक सैकिण्ड के लिए भी आ जावे तो वह बीज पड़ जाता है। किसी न किसी टाइम पर वह वृक्ष बन जाएगा। वह उगे बिना नहीं रह सकता। तो इस ख्यालात को रखा जाये तो मंदिर एक बड़ी भारी फायदेमंद चीज़ है। सारे दिन हम शिव को भूला हुआ है तो मंदिर के अंदर पूजन-वूजन करते हुए, घंटी घड़ियाल बजाते हुए स्मरण आए कि हम शिव पूजन कर रहे है। यह भाव जो पैदा होता है,

वास्तव में शिव का पूजन करते समय जो भाव मन में पैदा होता है, वास्तव में वो अंदरूनी शिव का ही पूजन हो रहा है। उससे हमें संतृष्टि मिलेगा। तो कहने का मतलब हमारा यह है कि मदिर के रहस्य को समझ कर इससे काम लिया जावे तो यह बड़ा भारी फायदा होयेगा। इतना कहकर इस विषय को हम खत्म कर देते हैं।

– ॐ –